doubtnut
India's Number 1 Education App

HINDI

BOOKS - X BOARDS

HINDI (COURSE B) 2016

Term I

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

कभी-कभी मैं अपने मित्रों की परीक्षा लेती हूँ. यह परखने के

लिए कि वे क्या देखते हैं। हाल ही में मेरी एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करने के बाद वापस लौटी। मैंने उनसे पूछा, "आपने क्या-क्या देखा?' "कुछ खास तो नहीं, उनका जवाब था। मुझे बहुत अचरज नहीं हुआ क्योंकि मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ। मेरा विश्वास है कि जिन लोगों की आँखें होती है, ये बहुत कम देखते हैं। क्या यह संभव है कि भला कोई जंगल में घंटाभर घूमे और फिर भी कोई विशेष चीज न देखे? मुझे-जिसे कुछ भी दिखाई नहीं देता-सैकड़ों रोचक चीजें मिलती हैं, जिन्हें मैं घूकर पहचान लेती हूँ। मैं भोज-पत्र के पेड़ की चिकनी छाल और पीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती हूँ। वसंत के दौरान में टहनियों में नई कलियों खोजती हूँ। मुझे फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी पुमावदार बनावट महसूस करने में आनंद मिलता

है। इस दौरान मुझे प्रकृति के जादू का कुछ अहसास होता है। कभी, जब मैं खुशनसीब होती है, तो टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर कानों में गूंजने लगते है। अपनी अंगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस कर मैं आनंदित हो उठती हूँ। मुझे चीड़ की फैली पत्तियों या घास का मैदान किसी भी गहेंगे कालीग से अधिक प्रिय है। बदलते हुए मौसम का समाँ मेरे जीवन में एक नया रंग और खुशियाँ भर जाता है। कभी-कभी मेरा दिल इन सब चीजों को देखने के लिए मचलउठता है। अगर मुझे इन चीजों को सिर्फ छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा, परन्तु, जिन लोगों की आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं। इस दुनिया के अलग-अलग सुंदर रंग उनकी संवेदना को नहीं छूते। मनुष्य अपनी

क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है। यह कितने दुःख की बात है कि दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक साधारण-सी चीज समझते हैं, जबकि इस नियामत से जिंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है। जिन लोगों की आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं -हेलन को ऐसा क्यों लगता है?

View Text Solution

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

कभी-कभी मैं अपने मित्रों की परीक्षा लेती हूँ. यह परखने के लिए कि वे क्या देखते हैं। हाल ही में मेरी एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करने के बाद वापस लौटी। मैंने उनसे पूछा, "आपने क्या-क्या देखा?' "कुछ खास तो नहीं, उनका जवाब था। मुझे बहुत अचरज नहीं हुआ क्योंकि मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ। मेरा विश्वास है कि जिन लोगों की आँखें होती है, ये बहुत कम देखते हैं। क्या यह संभव है कि भला कोई जंगल में घंटाभर घूमे और फिर भी कोई विशेष चीज न देखे? मुझे-जिसे कुछ भी दिखाई नहीं देता-सैकड़ों रोचक चीजें मिलती हैं, जिन्हें मैं घूकर पहचान लेती हूँ। मैं भोज-पत्र के पेड़ की चिकनी छाल और पीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती हूँ। वसंत के दौरान में टहनियों में नई कलियों खोजती हूँ। मुझे फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने

और उनकी पुमावदार बनावट महसूस करने में आनंद मिलता है। इस दौरान मुझे प्रकृति के जादू का कुछ अहसास होता है। कभी, जब मैं खुशनसीब होती है, तो टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर कानों में गूंजने लगते है। अपनी अंगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस कर मैं आनंदित हो उठती हूँ। मुझे चीड़ की फैली पत्तियों या घास का मैदान किसी भी गहेंगे कालीग से अधिक प्रिय है। बदलते हुए मौसम का समाँ मेरे जीवन में एक नया रंग और खुशियाँ भर जाता है। कभी-कभी मेरा दिल इन सब चीजों को देखने के लिए मचलउठता है। अगर मुझे इन चीजों को सिर्फ छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा, परन्तु, जिन लोगों की आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं। इस दुनिया के अलग-अलग

सुंदर रंग उनकी संवेदना को नहीं छूते। मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है। यह कितने दुःख की बात है कि दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक साधारण-सी चीज समझते हैं, जबकि इस नियामत से जिंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है।

कुछ खास तो नहीं अपनी मित्र से ऐसा उत्तर सुनकर उनके मन में क्या विचार आए होंगे?

View Text Solution

3. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

कभी-कभी मैं अपने मित्रों की परीक्षा लेती हूँ. यह परखने के लिए कि वे क्या देखते हैं। हाल ही में मेरी एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करने के बाद वापस लौटी। मैंने उनसे पूछा, "आपने क्या-क्या देखा?' "कुछ खास तो नहीं, उनका जवाब था। मुझे बहुत अचरज नहीं हुआ क्योंकि मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ। मेरा विश्वास है कि जिन लोगों की आँखें होती है, ये बहुत कम देखते हैं। क्या यह संभव है कि भला कोई जंगल में घंटाभर घूमे और फिर भी कोई विशेष चीज न देखे? मुझे-जिसे कुछ भी दिखाई नहीं देता-सैकड़ों रोचक चीजें मिलती हैं, जिन्हें मैं घूकर पहचान लेती हूँ। मैं भोज-पत्र के पेड़

की चिकनी छाल और पीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती हूँ। वसंत के दौरान में टहनियों में नई कलियों खोजती हूँ। मुझे फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी पुमावदार बनावट महसूस करने में आनंद मिलता है। इस दौरान मुझे प्रकृति के जादू का कुछ अहसास होता है। कभी, जब मैं खुशनसीब होती है, तो टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर कानों में गूंजने लगते है। अपनी अंगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस कर मैं आनंदित हो उठती हूँ। मुझे चीड़ की फैली पत्तियों या घास का मैदान किसी भी गहेंगे कालीग से अधिक प्रिय है। बदलते हुए मौसम का समाँ मेरे जीवन में एक नया रंग और खुशियाँ भर जाता है। कभी-कभी मेरा दिल इन सब चीजों को देखने के लिए मचलउठता है। अगर मुझे इन चीजों को सिर्फ छूने भर

से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा, परन्तु, जिन लोगों की आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं। इस दुनिया के अलग-अलग सुंदर रंग उनकी संवेदना को नहीं छूते। मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है। यह कितने दुःख की बात है कि दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक साधारण-सी चीज समझते हैं, जबकि इस नियामत से जिंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है।

प्रकृति का जादू' किसे कहा गया है?

View Text Solution

4. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

कभी-कभी मैं अपने मित्रों की परीक्षा लेती हूँ. यह परखने के लिए कि वे क्या देखते हैं। हाल ही में मेरी एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करने के बाद वापस लौटी। मैंने उनसे पूछा, "आपने क्या-क्या देखा?' "कुछ खास तो नहीं, उनका जवाब था। मुझे बहुत अचरज नहीं हुआ क्योंकि मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ। मेरा विश्वास है कि जिन लोगों की आँखें होती है, ये बहुत कम देखते हैं। क्या यह संभव है कि भला कोई जंगल में घंटाभर घूमे और फिर भी कोई विशेष चीज न देखे? मुझे-जिसे कुछ भी दिखाई नहीं देता-सैकड़ों रोचक चीजें मिलती हैं, जिन्हें मैं घूकर पहचान लेती हूँ। मैं भोज-पत्र के पेड़ की चिकनी छाल और पीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से

पहचान लेती हूँ। वसंत के दौरान में टहनियों में नई कलियों खोजती हूँ। मुझे फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी पुमावदार बनावट महसूस करने में आनंद मिलता है। इस दौरान मुझे प्रकृति के जादू का कुछ अहसास होता है। कभी, जब मैं खुशनसीब होती है, तो टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर कानों में गूंजने लगते है। अपनी अंगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस कर मैं आनंदित हो उठती हूँ। मुझे चीड़ की फैली पत्तियों या घास का मैदान किसी भी गहेंगे कालीग से अधिक प्रिय है। बदलते हुए मौसम का समाँ मेरे जीवन में एक नया रंग और खुशियाँ भर जाता है। कभी-कभी मेरा दिल इन सब चीजों को देखने के लिए मचलउठता है। अगर मुझे इन चीजों को सिर्फ छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा

मन मुग्ध ही हो जाएगा, परन्तु, जिन लोगों की आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं। इस दुनिया के अलग-अलग सुंदर रंग उनकी संवेदना को नहीं छूते। मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है। यह कितने दुःख की बात है कि दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक साधारण-सी चीज समझते हैं, जबकि इस नियामत से जिंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है। हेलन प्रकृति-प्रेमी थीं किन्हीं दो उदाहरणों द्वारा सिद्ध कीजिए।

View Text Solution

5. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

कभी-कभी मैं अपने मित्रों की परीक्षा लेती हूँ. यह परखने के लिए कि वे क्या देखते हैं। हाल ही में मेरी एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करने के बाद वापस लौटी। मैंने उनसे पूछा, "आपने क्या-क्या देखा?' "कुछ खास तो नहीं, उनका जवाब था। मुझे बहुत अचरज नहीं हुआ क्योंकि मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ। मेरा विश्वास है कि जिन लोगों की आँखें होती है, ये बहुत कम देखते हैं। क्या यह संभव है कि भला कोई जंगल में घंटाभर घूमे और फिर भी कोई विशेष चीज न देखे? मुझे-जिसे कुछ भी दिखाई नहीं देता-सैकड़ों रोचक चीजें मिलती हैं, जिन्हें मैं घूकर पहचान लेती हूँ। मैं भोज-पत्र के पेड़

की चिकनी छाल और पीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती हूँ। वसंत के दौरान में टहनियों में नई कलियों खोजती हूँ। मुझे फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी पुमावदार बनावट महसूस करने में आनंद मिलता है। इस दौरान मुझे प्रकृति के जादू का कुछ अहसास होता है। कभी, जब मैं खुशनसीब होती है, तो टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर कानों में गूंजने लगते है। अपनी अंगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस कर मैं आनंदित हो उठती हूँ। मुझे चीड़ की फैली पत्तियों या घास का मैदान किसी भी गहेंगे कालीग से अधिक प्रिय है। बदलते हुए मौसम का समाँ मेरे जीवन में एक नया रंग और खुशियाँ भर जाता है। कभी-कभी मेरा दिल इन सब चीजों को देखने के लिए मचलउठता है। अगर मुझे इन चीजों को सिर्फ छूने भर

से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा, परन्तु, जिन लोगों की आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं। इस दुनिया के अलग-अलग सुंदर रंग उनकी संवेदना को नहीं छूते। मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है। यह कितने दुःख की बात है कि दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक साधारण-सी चीज समझते हैं, जबकि इस नियामत से जिंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है।

हेलन को मनुष्य के कैसे स्वभाव पर दुःख होता है? क्यों?

View Text Solution

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

कभी-कभी मैं अपने मित्रों की परीक्षा लेती हूँ. यह परखने के लिए कि वे क्या देखते हैं। हाल ही में मेरी एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करने के बाद वापस लौटी। मैंने उनसे पूछा, "आपने क्या-क्या देखा?' "कुछ खास तो नहीं, उनका जवाब था। मुझे बहुत अचरज नहीं हुआ क्योंकि मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ। मेरा विश्वास है कि जिन लोगों की आँखें होती है, ये बहुत कम देखते हैं। क्या यह संभव है कि भला कोई जंगल में घंटाभर घूमे और फिर भी कोई विशेष चीज न देखे? मुझे-जिसे कुछ भी दिखाई नहीं देता-सैकड़ों रोचक चीजें मिलती हैं, जिन्हें मैं घूकर पहचान लेती हूँ। मैं भोज-पत्र के पेड़ की चिकनी छाल और पीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से

पहचान लेती हूँ। वसंत के दौरान में टहनियों में नई कलियों खोजती हूँ। मुझे फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी पुमावदार बनावट महसूस करने में आनंद मिलता है। इस दौरान मुझे प्रकृति के जादू का कुछ अहसास होता है। कभी, जब मैं खुशनसीब होती है, तो टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर कानों में गूंजने लगते है। अपनी अंगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस कर मैं आनंदित हो उठती हूँ। मुझे चीड़ की फैली पत्तियों या घास का मैदान किसी भी गहेंगे कालीग से अधिक प्रिय है। बदलते हुए मौसम का समाँ मेरे जीवन में एक नया रंग और खुशियाँ भर जाता है। कभी-कभी मेरा दिल इन सब चीजों को देखने के लिए मचलउठता है। अगर मुझे इन चीजों को सिर्फ छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा

मन मुग्ध ही हो जाएगा, परन्तु, जिन लोगों की आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं। इस दुनिया के अलग-अलग सुंदर रंग उनकी संवेदना को नहीं छूते। मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है। यह कितने दुःख की बात है कि दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक साधारण-सी चीज समझते हैं, जबकि इस नियामत से जिंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है।

जिन लोगों की आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं।

(सरल वाक्य में बदलें)

View Text Solution

7. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

कभी-कभी मैं अपने मित्रों की परीक्षा लेती हूँ. यह परखने के लिए कि वे क्या देखते हैं। हाल ही में मेरी एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करने के बाद वापस लौटी। मैंने उनसे पूछा, "आपने क्या-क्या देखा?' "कुछ खास तो नहीं, उनका जवाब था। मुझे बहुत अचरज नहीं हुआ क्योंकि मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ। मेरा विश्वास है कि जिन लोगों की आँखें होती है, ये बहुत कम देखते हैं। क्या यह संभव है कि भला कोई जंगल में घंटाभर घूमे और फिर भी कोई विशेष चीज न देखे? मुझे-जिसे कुछ भी दिखाई नहीं देता-सैकड़ों रोचक चीजें मिलती हैं, जिन्हें मैं घूकर पहचान लेती हूँ। मैं भोज-पत्र के पेड़ की चिकनी छाल और पीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से

पहचान लेती हूँ। वसंत के दौरान में टहनियों में नई कलियों खोजती हूँ। मुझे फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी पुमावदार बनावट महसूस करने में आनंद मिलता है। इस दौरान मुझे प्रकृति के जादू का कुछ अहसास होता है। कभी, जब मैं खुशनसीब होती है, तो टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर कानों में गूंजने लगते है। अपनी अंगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस कर मैं आनंदित हो उठती हूँ। मुझे चीड़ की फैली पत्तियों या घास का मैदान किसी भी गहेंगे कालीग से अधिक प्रिय है। बदलते हुए मौसम का समाँ मेरे जीवन में एक नया रंग और खुशियाँ भर जाता है। कभी-कभी मेरा दिल इन सब चीजों को देखने के लिए मचलउठता है। अगर मुझे इन चीजों को सिर्फ छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा

मन मुग्ध ही हो जाएगा, परन्तु, जिन लोगों की आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं। इस दुनिया के अलग-अलग सुंदर रंग उनकी संवेदना को नहीं छूते। मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है। यह कितने दुःख की बात है कि दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक साधारण-सी चीज समझते हैं, जबकि इस नियामत से जिंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है।

इन गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

View Text Solution

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

यदि तुम्हारे घर के एक कमरे में आग लगी हो तो क्या तुम दूसरे कमरे में सो सकते हो? यदि तुम्हारे घर के एक कमरे में लाशें सड़ रही हो तो क्या तुम दूसरे कमरे में प्रार्थना कर सकते हो? यदि हाँ तो मुझे तुम से कुछ नहीं कहना है। देश कागज पर बना नक्शा नहीं होता कि एक हिस्से के फट जाने पर बाकी हिस्से उसी तरह साबुत बने रहें और नदियाँ, पर्वत, शहर, गाँव वैसे ही अपनी-अपनी जगह दिखें अनमने रहें। यदि तुम यह नहीं मानते तो मुझे तुम्हारे साथ नहीं रहना है। इस दुनिया में आदमी की जान से बड़ा कुछ भी नहीं है न ईश्वर, न ज्ञान, न चुनाव, कागज पर लिखी कोई भी इबारत फाड़ी जा

सकती है और जमीन की सात परतों के भीतर गाड़ी जा सकती है। जो विवेक खड़ा हो लाशों को टेक वह अंधा है जो शासन चल रहा हो बंदूक की नली से हत्यारों का घंट ॥ है यदि तुम यह नहीं मानते तो मुझे अब एक क्षण भी तुम्हें नहीं सहना है। याद रखें एक बच्चे की हत्या एक औरत की मौत एक आदमी का किसी शासन का ही नहीं संपूर्ण राष्ट्र का है पतन।

पहले दो प्रश्नों के माध्यम से कवि क्या जानना चाहता है?

View Text Solution

9. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

यदि तुम्हारे घर के एक कमरे में आग लगी हो तो क्या तुम दूसरे कमरे में सो सकते हो? यदि तुम्हारे घर के एक कमरे में लाशें सड़ रही हो तो क्या तुम दूसरे कमरे में प्रार्थना कर सकते हो? यदि हाँ तो मुझे तुम से कुछ नहीं कहना है। देश कागज पर बना नक्शा नहीं होता कि एक हिस्से के फट जाने पर बाकी हिस्से उसी तरह साबुत बने रहें और नदियाँ, पर्वत, शहर, गाँव वैसे ही अपनी-अपनी जगह दिखें अनमने रहें। यदि तुम यह नहीं मानते तो मुझे तुम्हारे साथ नहीं रहना है। इस दुनिया में आदमी की जान से बड़ा कुछ भी नहीं है न ईश्वर, न ज्ञान, न चुनाव, कागज पर लिखी कोई भी इबारत फाड़ी जा

सकती है और जमीन की सात परतों के भीतर गाड़ी जा सकती है। जो विवेक खड़ा हो लाशों को टेक वह अंधा है जो शासन चल रहा हो बंदूक की नली से हत्यारों का घंट ॥ है यदि तुम यह नहीं मानते तो मुझे अब एक क्षण भी तुम्हें नहीं सहना है। याद रखें एक बच्चे की हत्या एक औरत की मौत एक आदमी का किसी शासन का ही नहीं संपूर्ण राष्ट्र का है पतन।

देश कागज पर बना नक्शा नहीं होता' - स्पष्ट कीजिए।

View Text Solution

10. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

यदि तुम्हारे घर के एक कमरे में आग लगी हो तो क्या तुम दूसरे कमरे में सो सकते हो? यदि तुम्हारे घर के एक कमरे में लाशें सड़ रही हो तो क्या तुम दूसरे कमरे में प्रार्थना कर सकते हो? यदि हाँ तो मुझे तुम से कुछ नहीं कहना है। देश कागज पर बना नक्शा नहीं होता कि एक हिस्से के फट जाने पर बाकी हिस्से उसी तरह साबुत बने रहें और नदियाँ, पर्वत, शहर, गाँव वैसे ही अपनी-अपनी जगह दिखें अनमने रहें। यदि तुम यह नहीं मानते तो मुझे तुम्हारे साथ नहीं रहना है। इस दुनिया में आदमी की जान से बड़ा कुछ भी नहीं है न ईश्वर, न ज्ञान, न चुनाव, कागज पर लिखी कोई भी इबारत फाड़ी जा

सकती है और जमीन की सात परतों के भीतर गाड़ी जा सकती है। जो विवेक खड़ा हो लाशों को टेक वह अंधा है जो शासन चल रहा हो बंदूक की नली से हत्यारों का घंट ॥ है यदि तुम यह नहीं मानते तो मुझे अब एक क्षण भी तुम्हें नहीं सहना है। याद रखें एक बच्चे की हत्या एक औरत की मौत एक आदमी का किसी शासन का ही नहीं संपूर्ण राष्ट्र का है पतन।

कवि ने दुनिया में किसे महत्वपूर्ण माना है? क्यों?

View Text Solution

11. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

यदि तुम्हारे घर के एक कमरे में आग लगी हो तो क्या तुम दूसरे कमरे में सो सकते हो? यदि तुम्हारे घर के एक कमरे में लाशें सड़ रही हो तो क्या तुम दूसरे कमरे में प्रार्थना कर सकते हो? यदि हाँ तो मुझे तुम से कुछ नहीं कहना है। देश कागज पर बना नक्शा नहीं होता कि एक हिस्से के फट जाने पर बाकी हिस्से उसी तरह साबुत बने रहें और नदियाँ, पर्वत, शहर, गाँव वैसे ही अपनी-अपनी जगह दिखें अनमने रहें। यदि तुम यह नहीं मानते तो मुझे तुम्हारे साथ नहीं रहना है। इस दुनिया में आदमी की जान से बड़ा कुछ भी नहीं है न ईश्वर, न ज्ञान, न चुनाव, कागज पर लिखी कोई भी इबारत फाड़ी जा

सकती है और जमीन की सात परतों के भीतर गाड़ी जा सकती है। जो विवेक खड़ा हो लाशों को टेक वह अंधा है जो शासन चल रहा हो बंदूक की नली से हत्यारों का घंट ॥ है यदि तुम यह नहीं मानते तो मुझे अब एक क्षण भी तुम्हें नहीं सहना है। याद रखें एक बच्चे की हत्या एक औरत की मौत एक आदमी का किसी शासन का ही नहीं संपूर्ण राष्ट्र का है पतन।

कोई भी हत्या पूरे राष्ट्र का पतन कैसे हो सकती है?

View Text Solution

12. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए-

थामीरो कुछ सचेत हुई और घर की तरफ दौड़ी। (सरल वाक्य में)

View Text Solution

13. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए-

सुभाष बाबू को पकड़कर गाड़ी द्वारा लाल बाजार लॉकअप में भेज दिया गया। (गिश्र वाक्य में)

View Text Solution

14. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए-

सालाना इम्तिहान हुआ, भाई साहब फेल हो गए. मैं पास हो गया। (संयुक्त वाक्य में)

View Text Solution

15. निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए-

उच्चाकांक्षा

View Text Solution

16. निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए-

लोकप्रिय

View Text Solution

17. निम्नलिखित शब्दों से समास बनाइए व समास का नाम लिखिए-

सत्य के लिए आग्रह (समास विग्रह)

View Text Solution

18. निम्नलिखित शब्दों से समास बनाइए व समास का नाम लिखिए-

अंधा है जो विश्वास (समास का नाम)

View Text Solution

19. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए-

दो से चार बनाना

View Text Solution

20. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए-

चुल्लू भर पानी देने वाला न होना

View Text Solution

21. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

"ढीठता की हद है। मैं जब से परिचय पूछ रही हूँ और तुम बस एक ही राग अलाप रहे हो। गीत गाओ-गीत गाओ, आखिर क्यों? क्या तुम्हें गाँव का नियम नहीं मालूम?' इतना बोलकर वह जाने के लिए तेजी से मुड़ी। तताँरा को मानो कुछ होश

आया। उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। वह उसके सामने रास्ता रोककर मानो गिड़गिड़ाने लगा।

किसने दीठता दिखाई? यह ढीठता क्या थी?

View Text Solution

22. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

"ढीठता की हद है। मैं जब से परिचय पूछ रही हूँ और तुम बस एक ही राग अलाप रहे हो। गीत गाओ-गीत गाओ, आखिर क्यों? क्या तुम्हें गाँव का नियम नहीं मालूम?' इतना बोलकर वह जाने के लिए तेजी से मुड़ी। ततँारा को मानो कुछ होश

आया। उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। वह उसके सामने रास्ता रोककर मानो गिड़गिड़ाने लगा।

तताँरा को अपनी किस गलती का अहसास हुआ ?

View Text Solution

23. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

"ढीठता की हद है। मैं जब से परिचय पूछ रही हूँ और तुम बस एक ही राग अलाप रहे हो। गीत गाओ-गीत गाओ, आखिर क्यों? क्या तुम्हें गाँव का नियम नहीं मालूम?' इतना बोलकर वह जाने के लिए तेजी से मुड़ी। तताँरा को मानो कुछ होश

आया। उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। वह उसके सामने रास्ता रोककर मानो गिड़गिड़ाने लगा।

गाँव का नियम किया था ?

View Text Solution

24. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

यह सब तो अपनी सुनी हुई लिख रहे हैं, पर सुभाष बाबू का और अपना विशेष फासला नहीं था। सुभाष बाबू बड़े जोर से वंदे मातरम् बोलते थे, यह अपनी आँख से देखा। पुलिस भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी। क्षितीश चटर्जी का

फटा हुआ सिर देखकर तथा बहता हुआ खून देखकर आँख मिच जाती थी। इधर यह हालत हो रही थी कि उधर स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़ झंडा फहरा रही थीं और घोषणा पढ़ रही थीं। स्त्रियाँ बहुत बड़ी संख्या में पहुँच गई थीं। प्रायः सबके साथ झंडा था। जो वोलेंटियर गए थे वे अपने स्थान से लाठियों पड़ने पर भी नहीं हटते थे।

यह कौन-सा दिन/वर्ष था? यह दिन महत्त्वपूर्ण क्यों था?

View Text Solution

25. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

यह सब तो अपनी सुनी हुई लिख रहे हैं, पर सुभाष बाबू का और अपना विशेष फासला नहीं था। सुभाष बाबू बड़े जोर से वंदे मातरम् बोलते थे, यह अपनी आँख से देखा। पुलिस भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी। क्षितीश चटर्जी का फटा हुआ सिर देखकर तथा बहता हुआ खून देखकर आँख मिच जाती थी। इधर यह हालत हो रही थी कि उधर स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़ झंडा फहरा रही थीं और घोषणा पढ़ रही थीं। स्त्रियाँ बहुत बड़ी संख्या में पहुँच गई थीं। प्रायः सबके साथ झंडा था। जो वोलेंटियर गए थे वे अपने स्थान से लाठियों पड़ने पर भी नहीं हटते थे।

स्त्रियों का क्या योगदान था?

View Text Solution

26. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

यह सब तो अपनी सुनी हुई लिख रहे हैं, पर सुभाष बाबू का और अपना विशेष फासला नहीं था। सुभाष बाबू बड़े जोर से वंदे मातरम् बोलते थे, यह अपनी आँख से देखा। पुलिस भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी। क्षितीश चटर्जी का फटा हुआ सिर देखकर तथा बहता हुआ खून देखकर आँख मिच जाती थी। इधर यह हालत हो रही थी कि उधर स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़ झंडा फहरा रही थीं और घोषणा पढ़ रही थीं। स्त्रियाँ बहुत बड़ी संख्या में पहुँच गई थीं। प्रायः सबके साथ झंडा था। जो वोलेंटियर गए थे वे अपने स्थान से

लाठियों पड़ने पर भी नहीं हटते थे।

पाठ में वर्णित किन्हीं दो क्रांतिकारी स्त्रियों के नाम लिखिए।

View Text Solution

27. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

छोटा भाई पढ़ता नहीं था फिर भी पास कैसे हो जाता था?

आप इसका क्या कारण समझते है?

View Text Solution

28. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

मीरा कृष्ण की चाकरी करने को इतनी आतुर क्यों है?

View Text Solution

29. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

तोप के लिए 'धर रखी गई है' वाक्यांश का प्रयोग क्यों किया गया है?

View Text Solution

30. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

कबीर के अनुसार 'राम वियोगी क्यों नहीं जी पाता है?

View Text Solution

31. पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के आधार पर लिखिए कि वर्षा ऋतु के दौरान पहाड़ी क्षेत्रों में क्या परिवर्तन आते है?

View Text Solution

32. एक ही रात में ठाकुरबारी में जो सुख-शांति और संतोष पाया, वह अपने अब तक के जीवन में हरिहर काका ने कभी नहीं पाया था।" इस कथन के संदर्भ सच्चे सुख-शांति और संतोष की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए तथा बताइए कि आप काका की उस स्थिति को कहाँ उचित मानते है? और क्यों?

View Text Solution

33. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए

पुस्तकें पढ़ने की आदत

- पढ़ने की घटती प्रवृत्ति
- कारण और हानि
- पढ़ने की आदत से लाभ

View Text Solution

34. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए

कम्प्यूटर हमारा मित्र

- क्या है

- विद्यार्थियों के लिए उपयोग
- सुझाव

View Text Solution

35. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए

स्वास्थ्य की रक्षा

- आवश्यकता
- पोषक भोजन
- लाभकारी सुझाव

View Text Solution

36. विद्यालय के गेट पर मध्यावकाश के समय ठेले और रेहड़ी वालों द्वारा जंक फूड बेचे जाने की शिकायत करते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर उन्हें रोकने का अनुरोध कीजिए।

View Text Solution

37. विद्यालय में छुट्टी के दिनों में भी प्रातःकाल योग की अभ्यास कक्षाएँ चलने की सूचना देते हुए इच्छुक विद्यार्थियों द्वारा अपना नाम देने हेतु सूचना पट्ट के लिए एक सूचना लगभग 30 शब्दों में लिखिए।

View Text Solution

38. सड़क पर टहलते हुए आपको एक बैग मिला, जिसमें कुछ रुपये, मोबाइल फोन तथा अन्य कई महत्त्वपूर्ण कागजात थे। लगभग 25 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए कि अधिकारी व्यक्ति आपसे संपर्क कर अपना बैग ले जाए।

View Text Solution

Outside Delhi Term Ii Set I

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- महात्माओं और विद्वानों का सबसे बड़ा लक्षण है-आवाज को ध्यान से सुनना। यह आवाज कुछ भी हो सकती है। कौओं की कर्कश आवाज से लेकर नदियों की छलछल तक। मार्टिन लूथर किंग के भाषण से लेकर किसी पागल के बड़बड़ाने तक। अमूमन ऐसा होता नहीं। सच यह है कि हम सुनना चाहते ही नहीं। बस बोलना चाहते है। हमें लगता है कि इससे लोग हमें बेहतर तरीके से समझेंगे। हालांकि ऐसा होतानहीं। हमें पता ही नहीं चलता और अधिक बोलने की कला हमें अनसुना करने की कला में पारंगत कर देती है। एक मनौवैज्ञानिक ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन घरों के अभिभावक ज्यादा बोलते है, यहाँ बच्चों में सही-गजरा

से जुड़ा स्वाभाविक ज्ञान कम विकसित हो पाता है, क्योंकि ज्यादा बोलना बातों को विरोधाभासी तरीके से सामने रखता है और सामने याला बस शब्दों के जाल में फंसकर रह जाता है। बात औपचारिक हो या अनौपचारिक, दोनों स्थितियों में हम दूसरे की न सुन, बस हावी होने की कोशिश करते हैं। खुद ज्यादा बोलने और दूसरों को अनसुना करने से जाहिर होता है कि हम अपने बारे में ज्यादा सोचते हैं और दूसरों के बारे में कम। ज्यादा बोलने वालों के दुश्मनों की भी संख्या ज्यादा होती है। अगर आप नए दुश्मन बनाना चाहते हैं, तो अपने दोस्तों से ज्यादा बोलें और अगर आप नए दोस्त बनाना चाहते हैं, तो दुश्मनों से कम बोलें। अमेरिका के सर्वाधिक चर्चित राष्ट्रपति रूजवेल्ट अपने माली तक के साथ कुछ समय बिताते और इस दौरान उनकी बातें ज्यादा सुनने की कोशिश

करते। वह कहते थे कि लोगों को अनसुना करना अपनी लोकप्रियता के साथ खिलवाड़ करने जैसा है। इसका लाभ यह मिला कि ज्यादातर अमेरिकी नागरिक उनके सुख में सुखी होते, और दुख में दुखी।

अनसुना करने की कला क्यों विकसित होती है?

View Text Solution

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- महात्माओं और विद्वानों का सबसे बड़ा लक्षण है-आवाज को ध्यान से सुनना। यह आवाज कुछ भी हो सकती है। कौओं की कर्कश आवाज से लेकर नदियों की

छलछल तक। मार्टिन लूथर किंग के भाषण से लेकर किसी पागल के बड़बड़ाने तक। अमूमन ऐसा होता नहीं। सच यह है कि हम सुनना चाहते ही नहीं। बस बोलना चाहते है। हमें लगता है कि इससे लोग हमें बेहतर तरीके से समझेंगे। हालांकि ऐसा होतानहीं। हमें पता ही नहीं चलता और अधिक बोलने की कला हमें अनसुना करने की कला में पारंगत कर देती है। एक मनौवैज्ञानिक ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन घरों के अभिभावक ज्यादा बोलते है, यहाँ बच्चों में सही-गजरा से जुड़ा स्वाभाविक ज्ञान कम विकसित हो पाता है, क्योंकि ज्यादा बोलना बातों को विरोधाभासी तरीके से सामने रखता है और सामने याला बस शब्दों के जाल में फंसकर रह जाता है। बात औपचारिक हो या अनौपचारिक, दोनों स्थितियों में हम दूसरे की न सुन, बस हावी होने की कोशिश करते हैं।

खुद ज्यादा बोलने और दूसरों को अनसुना करने से जाहिर होता है कि हम अपने बारे में ज्यादा सोचते हैं और दूसरों के बारे में कम। ज्यादा बोलने वालों के दुश्मनों की भी संख्या ज्यादा होती है। अगर आप नए दुश्मन बनाना चाहते हैं, तो अपने दोस्तों से ज्यादा बोलें और अगर आप नए दोस्त बनाना चाहते हैं, तो दुश्मनों से कम बोलें। अमेरिका के सर्वाधिक चर्चित राष्ट्रपति रूजवेल्ट अपने माली तक के साथ कुछ समय बिताते और इस दौरान उनकी बातें ज्यादा सुनने की कोशिश करते। वह कहते थे कि लोगों को अनसुना करना अपनी लोकप्रियता के साथ खिलवाड़ करने जैसा है। इसका लाभ यह मिला कि ज्यादातर अमेरिकी नागरिक उनके सुख में सुखी होते, और दुख में दुखी।

अधिक बोलने वाले अभिभावकों का बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ता है और क्यों?

View Text Solution

3. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- महात्माओं और विद्वानों का सबसे बड़ा लक्षण है-आवाज को ध्यान से सुनना। यह आवाज कुछ भी हो सकती है। कौओं की कर्कश आवाज से लेकर नदियों की छलछल तक। मार्टिन लूथर किंग के भाषण से लेकर किसी पागल के बड़बड़ाने तक। अमूमन ऐसा होता नहीं। सच यह है कि हम सुनना चाहते ही नहीं। बस बोलना चाहते है। हमें

लगता है कि इससे लोग हमें बेहतर तरीके से समझेंगे। हालांकि ऐसा होतानहीं। हमें पता ही नहीं चलता और अधिक बोलने की कला हमें अनसुना करने की कला में पारंगत कर देती है। एक मनौवैज्ञानिक ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन घरों के अभिभावक ज्यादा बोलते है, यहाँ बच्चों में सही-गजरा से जुड़ा स्वाभाविक ज्ञान कम विकसित हो पाता है, क्योंकि ज्यादा बोलना बातों को विरोधाभासी तरीके से सामने रखता है और सामने याला बस शब्दों के जाल में फंसकर रह जाता है। बात औपचारिक हो या अनौपचारिक, दोनों स्थितियों में हम दूसरे की न सुन, बस हावी होने की कोशिश करते हैं। खुद ज्यादा बोलने और दूसरों को अनसुना करने से जाहिर होता है कि हम अपने बारे में ज्यादा सोचते हैं और दूसरों के बारे में कम। ज्यादा बोलने वालों के दुश्मनों की भी संख्या

ज्यादा होती है। अगर आप नए दुश्मन बनाना चाहते हैं, तो अपने दोस्तों से ज्यादा बोलें और अगर आप नए दोस्त बनाना चाहते हैं, तो दुश्मनों से कम बोलें। अमेरिका के सर्वाधिक चर्चित राष्ट्रपति रूजवेल्ट अपने माली तक के साथ कुछ समय बिताते और इस दौरान उनकी बातें ज्यादा सुनने की कोशिश करते। वह कहते थे कि लोगों को अनसुना करना अपनी लोकप्रियता के साथ खिलवाड़ करने जैसा है। इसका लाभ यह मिला कि ज्यादातर अमेरिकी नागरिक उनके सुख में सुखी होते, और दुख में दुखी।

अधिक बोलना किन बातों का सूचक है?

View Text Solution

4. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- महात्माओं और विद्वानों का सबसे बड़ा लक्षण है-आवाज को ध्यान से सुनना। यह आवाज कुछ भी हो सकती है। कौओं की कर्कश आवाज से लेकर नदियों की छलछल तक। मार्टिन लूथर किंग के भाषण से लेकर किसी पागल के बड़बड़ाने तक। अमूमन ऐसा होता नहीं। सच यह है कि हम सुनना चाहते ही नहीं। बस बोलना चाहते है। हमें लगता है कि इससे लोग हमें बेहतर तरीके से समझेंगे। हालांकि ऐसा होतानहीं। हमें पता ही नहीं चलता और अधिक बोलने की कला हमें अनसुना करने की कला में पारंगत कर देती है। एक मनौवैज्ञानिक ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन घरों के अभिभावक ज्यादा बोलते है, यहाँ बच्चों में सही-गजरा से जुड़ा स्वाभाविक ज्ञान कम विकसित हो पाता है, क्योंकि

ज्यादा बोलना बातों को विरोधाभासी तरीके से सामने रखता है और सामने याला बस शब्दों के जाल में फंसकर रह जाता है। बात औपचारिक हो या अनौपचारिक, दोनों स्थितियों में हम दूसरे की न सुन, बस हावी होने की कोशिश करते हैं। खुद ज्यादा बोलने और दूसरों को अनसुना करने से जाहिर होता है कि हम अपने बारे में ज्यादा सोचते हैं और दूसरों के बारे में कम। ज्यादा बोलने वालों के दुश्मनों की भी संख्या ज्यादा होती है। अगर आप नए दुश्मन बनाना चाहते हैं, तो अपने दोस्तों से ज्यादा बोलें और अगर आप नए दोस्त बनाना चाहते हैं, तो दुश्मनों से कम बोलें। अमेरिका के सर्वाधिक चर्चित राष्ट्रपति रूजवेल्ट अपने माली तक के साथ कुछ समय बिताते और इस दौरान उनकी बातें ज्यादा सुनने की कोशिश करते। वह कहते थे कि लोगों को अनसुना करना अपनी

लोकप्रियता के साथ खिलवाड़ करने जैसा है। इसका लाभ यह मिला कि ज्यादातर अमेरिकी नागरिक उनके सुख में सुखी होते, और दुख में दुखी।

रूजवेल्ट की लोकप्रियता का क्या कारण बताया गया

View Text Solution

5. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- महात्माओं और विद्वानों का सबसे बड़ा लक्षण है-आवाज को ध्यान से सुनना। यह आवाज कुछ भी हो सकती है। कौओं की कर्कश आवाज से लेकर नदियों की छलछल तक। मार्टिन लूथर किंग के भाषण से लेकर किसी

पागल के बड़बड़ाने तक। अमूमन ऐसा होता नहीं। सच यह है कि हम सुनना चाहते ही नहीं। बस बोलना चाहते है। हमें लगता है कि इससे लोग हमें बेहतर तरीके से समझेंगे। हालांकि ऐसा होतानहीं। हमें पता ही नहीं चलता और अधिक बोलने की कला हमें अनसुना करने की कला में पारंगत कर देती है। एक मनौवैज्ञानिक ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन घरों के अभिभावक ज्यादा बोलते है, यहाँ बच्चों में सही-गजरा से जुड़ा स्वाभाविक ज्ञान कम विकसित हो पाता है, क्योंकि ज्यादा बोलना बातों को विरोधाभासी तरीके से सामने रखता है और सामने याला बस शब्दों के जाल में फंसकर रह जाता है। बात औपचारिक हो या अनौपचारिक, दोनों स्थितियों में हम दूसरे की न सुन, बस हावी होने की कोशिश करते हैं। खुद ज्यादा बोलने और दूसरों को अनसुना करने से जाहिर

होता है कि हम अपने बारे में ज्यादा सोचते हैं और दूसरों के बारे में कम। ज्यादा बोलने वालों के दुश्मनों की भी संख्या ज्यादा होती है। अगर आप नए दुश्मन बनाना चाहते हैं, तो अपने दोस्तों से ज्यादा बोलें और अगर आप नए दोस्त बनाना चाहते हैं, तो दुश्मनों से कम बोलें। अमेरिका के सर्वाधिक चर्चित राष्ट्रपति रूजवेल्ट अपने माली तक के साथ कुछ समय बिताते और इस दौरान उनकी बातें ज्यादा सुनने की कोशिश करते। वह कहते थे कि लोगों को अनसुना करना अपनी लोकप्रियता के साथ खिलवाड़ करने जैसा है। इसका लाभ यह मिला कि ज्यादातर अमेरिकी नागरिक उनके सुख में सुखी होते, और दुख में दुखी।

तर्कसम्मत टिप्पणी कीजिए-"हम सुनना चाहते ही नहीं।"

View Text Solution

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- महात्माओं और विद्वानों का सबसे बड़ा लक्षण है-आवाज को ध्यान से सुनना। यह आवाज कुछ भी हो सकती है। कौओं की कर्कश आवाज से लेकर नदियों की छलछल तक। मार्टिन लूथर किंग के भाषण से लेकर किसी पागल के बड़बड़ाने तक। अमूमन ऐसा होता नहीं। सच यह है कि हम सुनना चाहते ही नहीं। बस बोलना चाहते है। हमें लगता है कि इससे लोग हमें बेहतर तरीके से समझेंगे। हालांकि ऐसा होतानहीं। हमें पता ही नहीं चलता और अधिक बोलने की कला हमें अनसुना करने की कला में पारंगत कर देती है। एक मनौवैज्ञानिक ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन

घरों के अभिभावक ज्यादा बोलते है, यहाँ बच्चों में सही-गजरा से जुड़ा स्वाभाविक ज्ञान कम विकसित हो पाता है, क्योंकि ज्यादा बोलना बातों को विरोधाभासी तरीके से सामने रखता है और सामने याला बस शब्दों के जाल में फंसकर रह जाता है। बात औपचारिक हो या अनौपचारिक, दोनों स्थितियों में हम दूसरे की न सुन, बस हावी होने की कोशिश करते हैं। खुद ज्यादा बोलने और दूसरों को अनसुना करने से जाहिर होता है कि हम अपने बारे में ज्यादा सोचते हैं और दूसरों के बारे में कम। ज्यादा बोलने वालों के दुश्मनों की भी संख्या ज्यादा होती है। अगर आप नए दुश्मन बनाना चाहते हैं, तो अपने दोस्तों से ज्यादा बोलें और अगर आप नए दोस्त बनाना चाहते हैं, तो दुश्मनों से कम बोलें। अमेरिका के सर्वाधिक चर्चित राष्ट्रपति रूजवेल्ट अपने माली तक के साथ कुछ समय

बिताते और इस दौरान उनकी बातें ज्यादा सुनने की कोशिश करते। वह कहते थे कि लोगों को अनसुना करना अपनी लोकप्रियता के साथ खिलवाड़ करने जैसा है। इसका लाभ यह मिला कि ज्यादातर अमेरिकी नागरिक उनके सुख में सुखी होते, और दुख में दुखी।

अनुच्छेद का मूल भाव तीन-चार वाक्यों में लिखिए।

View Text Solution

7. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

वह पुस्तक लेने बाजार गया। (मिश्र वाक्य में बदलकर लिखिए)

View Text Solution

8. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

तुमने जो घड़ी खरीदी, वह अच्छी थी। (सरल वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

9. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

वह वाचनालय जाकर समाचार पत्र पढ़ने लगा। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

10. निम्नलिखित का विग्रह करके समास का नाम लिखिए :

दहेज-प्रथा,महात्मा

View Text Solution

11. निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए :

नया जो युवक, ध्यान में मग्न

View Text Solution

12. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

नाकों चने चबाना,बाल-बाल बचना

View Text Solution

13. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए कि समुद्र के गुस्से का क्या कारण था? उसने अपना गुस्सा कैसे व्यक्त किया?

View Text Solution

14. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

सआदत अली कौन था? कर्नल उसे अवध के तख्त पर क्यों बिठाना चाहता था?

View Text Solution

15. झेन की देन' पाठ में जापानी लोगों को मानसिक रोग होने के क्या-क्या कारण बताए गए हैं? आप इनसे कहाँ तक सहमत हैं ? तर्कसहित लिखिए।

View Text Solution

16. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

संसार की रचना भले ही कैसे हुई हो, लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चुका है।

'मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी-' कथन का क्या आशय है?

View Text Solution

17. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

संसार की रचना भले ही कैसे हुई हो, लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चुका है।

परिवार के टुकड़ों में बँटकर एक दूसरे से दूर होने के क्या कारण हैं?

View Text Solution

18. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

संसार की रचना भले ही कैसे हुई हो, लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चुका है।

आशय समझाइए धरती किसी एक की नहीं है।

View Text Solution

19. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

बिहारी ने ईश्वर प्राप्ति में किन साधनों को साधक और किनको बाधक माना है?

View Text Solution

20. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'कर चले हम फिदा' गीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है?

View Text Solution

21. आत्मत्राण' कविता में कवि की प्रार्थना से क्या संदेश मिलता है? अपने शब्दों में लिखिए।

View Text Solution

22. घर वालों के मना करने पर भी टोपी का लगाव इफ्फन के घर और उसकी दादी से क्यों था? दोनों के अनजान, अटूट रिश्ते के बारे में मानवीय मूल्यों की दृष्टि से अपने विचार लिखिए।

View Text Solution

23. दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग १०० शब्दों में अनुच्छेद लिखिए:

मित्रता

- मित्रता का महत्त्व
- अच्छे मित्र के लक्षण
- लाभ-हानि

View Text Solution

24. दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग १०० शब्दों में अनुच्छेद लिखिए:

दहेज प्रथा—एक अभिशाप

- सामाजिक समस्या
- रोकथाम के उपाय
- युवकों का कर्तव्य

View Text Solution

25. दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग १०० शब्दों में अनुच्छेद लिखिए:

कम्प्यूटर

- उपयोगी वैज्ञानिक आविष्कार
- विविध क्षेत्रों में कंप्यूटर
- लाभ-हानि

View Text Solution

26. आपके नाम से प्रेषित एक हजार रु. के मनीआर्डर की प्राप्ति न होने का शिकायत पत्र अधीक्षक पोस्ट आफिस को लिखिए।

View Text Solution

27. विद्यालय में आयोजित होने वाली वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिए एक सूचना लगभग 30 शब्दों में साहित्यिक क्लब के सचिव की ओर से विद्यालय सूचना पट के लिए लिखिए।

View Text Solution

28. अपने पुराने मकान के बेचने संबंधी विज्ञापन का आलेख लगभग 25 शब्दों में तैयार कीजिए।

View Text Solution

Outside Delhi Term Ii Set Ii

1. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

मैंने एक बीमार व्यक्ति को देखा। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

यद्यपि वह बहुत मेहनती है फिर भी सफल नहीं हो सका।

(रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए)

View Text Solution

3. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

शरीर से कमजोर व्यक्ति के लिए यह प्रतियोगिता नहीं है।

(मिश्र वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

4. निम्नलिखित का विग्रह करके समास का नाम बताइए :

जनहित

View Text Solution

5. निम्नलिखित का विग्रह करके समास का नाम बताइए :

मधुरफल

View Text Solution

6. निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए :

स्वप्न देखने वाला

View Text Solution

7. निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए :

अपनी रक्षा

View Text Solution

8. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

पानी-पानी होना, सिर पर कफन बाँधना।

View Text Solution

9. पाठ के आधार पर प्रतिपादित कीजिए कि दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाले अब कम मिलते हैं।

View Text Solution

10. नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रबंधक को पत्र लिखकर हिंदी में प्रकाशित नवीनतम बाल साहित्य की पुस्तकें भेजने हेतु अनुरोध कीजिए।

View Text Solution

Outside Delhi Term Ii Set Iii

1. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

माता-पिता की सेवा करने वाले को किसी अन्य की सेवा नहीं चाहिए। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

प्रातःकाल टहलने के कारण वह स्वस्थ रहता है। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

3. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

परिश्रमी व्यक्ति को दुःख नहीं झेलना पड़ता। (रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए)

View Text Solution

4. निम्नलिखित का विग्रह करके समास का नाम बताइए :

चिंतारहित

View Text Solution

5. निम्नलिखित का विग्रह करके समास का नाम बताइए :

शुभदिन

View Text Solution

6. निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए :

माता का भक्त

View Text Solution

7. निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए :

चाँद जैसा मुख

View Text Solution

8. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

खून सूखना,कागजी घोड़े दौड़ाना।

View Text Solution

9. टी सेरेमनी' की तैयारी और उसके प्रभाव पर चर्चा कीजिए।

View Text Solution

10. कर चले हम फिदा' कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

View Text Solution

11. रेल द्वारा बुक कराकर भेजा गया घरेलू सामान आपके निवास के निकटस्थ स्टेशन तक नहीं पहुंचा है, इसकी शिकायत करते हुए रेल प्रबंधक को एक पत्र लिखिए।

View Text Solution

Delhi Term Ii Set I

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ एक तरफ भौतिक समृद्धि अपनी ऊँचाई पर है, तो दूसरी तरफ चारित्रिक पतन की गहराई है। आधुनिकीकरण में उलझा मानव सफलता की नित नई परिभाषाएँ खोजता रहता है और अपनी अंतहीन इच्छाओं के रेगिस्तान में भटकता रहता है। ऐसे समय में सच्ची सफलता और सुख-शांति की प्यास से व्याकुल व्यक्ति अनेक मानसिक रोगों का शिकार बनता जा रहा है। हममें से कितने लोगों को इस बात का ज्ञान है कि जीवन में सफलता प्राप्त करना और सफल जीवन जीना, यह दोनों दो अलग-

अलग बातें है। यह जरूरी नहीं कि जिसने अपने जीवन में साधारण कामनाओं को हासिल कर लिया हो, वह पूर्णतः संतुष्ट और प्रसन्न भी हो। अतः हमें गंभीरतापूर्वक इस बात को समझना चाहिए कि इच्छित फल को प्राप्त कर लेना ही सफलता नहीं है। जब तक हम अपने जीवन में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का सिंचन नहीं करेंगे, तब तक यथार्थ सफलता पाना हमारे लिए मुश्किल ही नहीं, अपितु असंभव कार्य हो जाएगा, क्योंकि बिना मूल्यों के प्राप्त सफलता केवल क्षणभंगुर सुख के समान रहती है। कुछ निराशावादी लोगों का कहना है कि हम सफल नहीं हो सकते, क्योंकि हमारी तकदीर या परिस्थितियों ही ऐसी हैं, परंतु यदि हम अपना ध्येय निश्चित करके उसे अपने मन में बिठा लें, तो फिर सफलता स्वयं हमारी ओर चलकर आएगी। सफल होना हर मनुष्य का

जन्मसिद्ध अधिकार है, परंतु यदि हम अपनी विफलताओं के बारे में ही सोचते रहेंगे, तो सफलता को कभी हासिल नहीं कर पाएँगे। अतः विफलताओं की चिंता न करें, क्योंकि ये तो हमारे जीवन का सौंदर्य हैं और संघर्ष जीवन का काव्य है. कई बार प्रथम आघात में पत्थर नहीं टूट पाता, उसे तोड़ने के लिए कई आघात करने पड़ते हैं, इसलिए सदैव अपने लक्ष्य को सामने रख आगे बढ़ने की जरूरत है। कहा गया है कि जीवन में सकारात्मक कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। मनुष्य के मानसिक रोग और अशांति का कारण किसे माना गया है?

View Text Solution

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ एक तरफ भौतिक समृद्धि अपनी ऊँचाई पर है, तो दूसरी तरफ चारित्रिक पतन की गहराई है। आधुनिकीकरण में उलझा मानव सफलता की नित नई परिभाषाएँ खोजता रहता है और अपनी अंतहीन इच्छाओं के रेगिस्तान में भटकता रहता है। ऐसे समय में सच्ची सफलता और सुख-शांति की प्यास से व्याकुल व्यक्ति अनेक मानसिक रोगों का शिकार बनता जा रहा है। हममें से कितने लोगों को इस बात का ज्ञान है कि जीवन में सफलता प्राप्त करना और सफल जीवन जीना, यह दोनों दो अलग-अलग बातें है। यह जरूरी नहीं कि जिसने अपने जीवन में साधारण कामनाओं को हासिल कर लिया हो, वह पूर्णतः

संतुष्ट और प्रसन्न भी हो। अतः हमें गंभीरतापूर्वक इस बात को समझना चाहिए कि इच्छित फल को प्राप्त कर लेना ही सफलता नहीं है। जब तक हम अपने जीवन में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का सिंचन नहीं करेंगे, तब तक यथार्थ सफलता पाना हमारे लिए मुश्किल ही नहीं, अपितु असंभव कार्य हो जाएगा, क्योंकि बिना मूल्यों के प्राप्त सफलता केवल क्षणभंगुर सुख के समान रहती है। कुछ निराशावादी लोगों का कहना है कि हम सफल नहीं हो सकते, क्योंकि हमारी तकदीर या परिस्थितियों ही ऐसी हैं, परंतु यदि हम अपना ध्येय निश्चित करके उसे अपने मन में बिठा लें, तो फिर सफलता स्वयं हमारी ओर चलकर आएगी। सफल होना हर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है, परंतु यदि हम अपनी विफलताओं के बारे में ही सोचते रहेंगे, तो सफलता को कभी हासिल नहीं

कर पाएँगे। अतः विफलताओं की चिंता न करें, क्योंकि ये तो हमारे जीवन का सौंदर्य हैं और संघर्ष जीवन का काव्य है. कई बार प्रथम आघात में पत्थर नहीं टूट पाता, उसे तोड़ने के लिए कई आघात करने पड़ते हैं, इसलिए सदैव अपने लक्ष्य को सामने रख आगे बढ़ने की जरूरत है। कहा गया है कि जीवन में सकारात्मक कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। सफलता पाना और सफल जीवन जीना दोनों बातें अलग कैसे है?

View Text Solution

3. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ एक तरफ भौतिक समृद्धि अपनी ऊँचाई पर है, तो दूसरी तरफ चारित्रिक पतन की गहराई है। आधुनिकीकरण में उलझा मानव सफलता की नित नई परिभाषाएँ खोजता रहता है और अपनी अंतहीन इच्छाओं के रेगिस्तान में भटकता रहता है। ऐसे समय में सच्ची सफलता और सुख-शांति की प्यास से व्याकुल व्यक्ति अनेक मानसिक रोगों का शिकार बनता जा रहा है। हममें से कितने लोगों को इस बात का ज्ञान है कि जीवन में सफलता प्राप्त करना और सफल जीवन जीना, यह दोनों दो अलग-अलग बातें है। यह जरूरी नहीं कि जिसने अपने जीवन में

साधारण कामनाओं को हासिल कर लिया हो, वह पूर्णतः संतुष्ट और प्रसन्न भी हो। अतः हमें गंभीरतापूर्वक इस बात को समझना चाहिए कि इच्छित फल को प्राप्त कर लेना ही सफलता नहीं है। जब तक हम अपने जीवन में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का सिंचन नहीं करेंगे, तब तक यथार्थ सफलता पाना हमारे लिए मुश्किल ही नहीं, अपितु असंभव कार्य हो जाएगा, क्योंकि बिना मूल्यों के प्राप्त सफलता केवल क्षणभंगुर सुख के समान रहती है। कुछ निराशावादी लोगों का कहना है कि हम सफल नहीं हो सकते, क्योंकि हमारी तकदीर या परिस्थितियों ही ऐसी हैं, परंतु यदि हम अपना ध्येय निश्चित करके उसे अपने मन में बिठा लें, तो फिर सफलता स्वयं हमारी ओर चलकर आएगी। सफल होना हर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है, परंतु यदि हम अपनी विफलताओं के

बारे में ही सोचते रहेंगे, तो सफलता को कभी हासिल नहीं कर पाएँगे। अतः विफलताओं की चिंता न करें, क्योंकि ये तो हमारे जीवन का सौंदर्य हैं और संघर्ष जीवन का काव्य है. कई बार प्रथम आघात में पत्थर नहीं टूट पाता, उसे तोड़ने के लिए कई आघात करने पड़ते हैं, इसलिए सदैव अपने लक्ष्य को सामने रख आगे बढ़ने की जरूरत है। कहा गया है कि जीवन में सकारात्मक कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

गद्यांश में जीवन का सौंदर्य और संघर्ष किसे बताया गया है? क्यों?

View Text Solution

4. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ एक तरफ भौतिक समृद्धि अपनी ऊँचाई पर है, तो दूसरी तरफ चारित्रिक पतन की गहराई है। आधुनिकीकरण में उलझा मानव सफलता की नित नई परिभाषाएँ खोजता रहता है और अपनी अंतहीन इच्छाओं के रेगिस्तान में भटकता रहता है। ऐसे समय में सच्ची सफलता और सुख-शांति की प्यास से व्याकुल व्यक्ति अनेक मानसिक रोगों का शिकार बनता जा रहा है। हममें से कितने लोगों को इस बात का ज्ञान है कि जीवन में सफलता प्राप्त करना और सफल जीवन जीना, यह दोनों दो अलग-अलग बातें है। यह जरूरी नहीं कि जिसने अपने जीवन में

साधारण कामनाओं को हासिल कर लिया हो, वह पूर्णतः संतुष्ट और प्रसन्न भी हो। अतः हमें गंभीरतापूर्वक इस बात को समझना चाहिए कि इच्छित फल को प्राप्त कर लेना ही सफलता नहीं है। जब तक हम अपने जीवन में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का सिंचन नहीं करेंगे, तब तक यथार्थ सफलता पाना हमारे लिए मुश्किल ही नहीं, अपितु असंभव कार्य हो जाएगा, क्योंकि बिना मूल्यों के प्राप्त सफलता केवल क्षणभंगुर सुख के समान रहती है। कुछ निराशावादी लोगों का कहना है कि हम सफल नहीं हो सकते, क्योंकि हमारी तकदीर या परिस्थितियों ही ऐसी हैं, परंतु यदि हम अपना ध्येय निश्चित करके उसे अपने मन में बिठा लें, तो फिर सफलता स्वयं हमारी ओर चलकर आएगी। सफल होना हर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है, परंतु यदि हम अपनी विफलताओं के

बारे में ही सोचते रहेंगे, तो सफलता को कभी हासिल नहीं कर पाएँगे। अतः विफलताओं की चिंता न करें, क्योंकि ये तो हमारे जीवन का सौंदर्य हैं और संघर्ष जीवन का काव्य है. कई बार प्रथम आघात में पत्थर नहीं टूट पाता, उसे तोड़ने के लिए कई आघात करने पड़ते हैं, इसलिए सदैव अपने लक्ष्य को सामने रख आगे बढ़ने की जरूरत है। कहा गया है कि जीवन में सकारात्मक कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

पत्थर का उदाहरण क्यों दिया गया है?

View Text Solution

5. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ एक तरफ भौतिक समृद्धि अपनी ऊँचाई पर है, तो दूसरी तरफ चारित्रिक पतन की गहराई है। आधुनिकीकरण में उलझा मानव सफलता की नित नई परिभाषाएँ खोजता रहता है और अपनी अंतहीन इच्छाओं के रेगिस्तान में भटकता रहता है। ऐसे समय में सच्ची सफलता और सुख-शांति की प्यास से व्याकुल व्यक्ति अनेक मानसिक रोगों का शिकार बनता जा रहा है। हममें से कितने लोगों को इस बात का ज्ञान है कि जीवन में सफलता प्राप्त करना और सफल जीवन जीना, यह दोनों दो अलग-अलग बातें है। यह जरूरी नहीं कि जिसने अपने जीवन में

साधारण कामनाओं को हासिल कर लिया हो, वह पूर्णतः संतुष्ट और प्रसन्न भी हो। अतः हमें गंभीरतापूर्वक इस बात को समझना चाहिए कि इच्छित फल को प्राप्त कर लेना ही सफलता नहीं है। जब तक हम अपने जीवन में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का सिंचन नहीं करेंगे, तब तक यथार्थ सफलता पाना हमारे लिए मुश्किल ही नहीं, अपितु असंभव कार्य हो जाएगा, क्योंकि बिना मूल्यों के प्राप्त सफलता केवल क्षणभंगुर सुख के समान रहती है। कुछ निराशावादी लोगों का कहना है कि हम सफल नहीं हो सकते, क्योंकि हमारी तकदीर या परिस्थितियों ही ऐसी हैं, परंतु यदि हम अपना ध्येय निश्चित करके उसे अपने मन में बिठा लें, तो फिर सफलता स्वयं हमारी ओर चलकर आएगी। सफल होना हर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है, परंतु यदि हम अपनी विफलताओं के

बारे में ही सोचते रहेंगे, तो सफलता को कभी हासिल नहीं कर पाएँगे। अतः विफलताओं की चिंता न करें, क्योंकि ये तो हमारे जीवन का सौंदर्य हैं और संघर्ष जीवन का काव्य है. कई बार प्रथम आघात में पत्थर नहीं टूट पाता, उसे तोड़ने के लिए कई आघात करने पड़ते हैं, इसलिए सदैव अपने लक्ष्य को सामने रख आगे बढ़ने की जरूरत है। कहा गया है कि जीवन में सकारात्मक कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। वास्तविक सफलता पाने के लिए क्या आवश्यक है और क्यों?

View Text Solution

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ एक तरफ भौतिक समृद्धि अपनी ऊँचाई पर है, तो दूसरी तरफ चारित्रिक पतन की गहराई है। आधुनिकीकरण में उलझा मानव सफलता की नित नई परिभाषाएँ खोजता रहता है और अपनी अंतहीन इच्छाओं के रेगिस्तान में भटकता रहता है। ऐसे समय में सच्ची सफलता और सुख-शांति की प्यास से व्याकुल व्यक्ति अनेक मानसिक रोगों का शिकार बनता जा रहा है। हममें से कितने लोगों को इस बात का ज्ञान है कि जीवन में सफलता प्राप्त करना और सफल जीवन जीना, यह दोनों दो अलग-अलग बातें है। यह जरूरी नहीं कि जिसने अपने जीवन में

साधारण कामनाओं को हासिल कर लिया हो, वह पूर्णतः संतुष्ट और प्रसन्न भी हो। अतः हमें गंभीरतापूर्वक इस बात को समझना चाहिए कि इच्छित फल को प्राप्त कर लेना ही सफलता नहीं है। जब तक हम अपने जीवन में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का सिंचन नहीं करेंगे, तब तक यथार्थ सफलता पाना हमारे लिए मुश्किल ही नहीं, अपितु असंभव कार्य हो जाएगा, क्योंकि बिना मूल्यों के प्राप्त सफलता केवल क्षणभंगुर सुख के समान रहती है। कुछ निराशावादी लोगों का कहना है कि हम सफल नहीं हो सकते, क्योंकि हमारी तकदीर या परिस्थितियों ही ऐसी हैं, परंतु यदि हम अपना ध्येय निश्चित करके उसे अपने मन में बिठा लें, तो फिर सफलता स्वयं हमारी ओर चलकर आएगी। सफल होना हर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है, परंतु यदि हम अपनी विफलताओं के

बारे में ही सोचते रहेंगे, तो सफलता को कभी हासिल नहीं कर पाएँगे। अतः विफलताओं की चिंता न करें, क्योंकि ये तो हमारे जीवन का सौंदर्य हैं और संघर्ष जीवन का काव्य है. कई बार प्रथम आघात में पत्थर नहीं टूट पाता, उसे तोड़ने के लिए कई आघात करने पड़ते हैं, इसलिए सदैव अपने लक्ष्य को सामने रख आगे बढ़ने की जरूरत है। कहा गया है कि जीवन में सकारात्मक कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

आशय स्पष्ट कीजिए : "संघर्ष जीवन का काव्य है।

View Text Solution

7. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

ज्यों ही वह पहुँचा वर्षा होने लगी।

(सरल वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

8. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

जब उसने भाषण शुरू किया तो तालियों की गड़गड़ाहट से उसका स्वागत हुआ।

(संयुक्त वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

9. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

मैंने वहाँ एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति देखा।

(मिश्र वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

10. निम्नलिखित का विग्रह करके समास का नाम लिखिए :

ऋणमुक्त

View Text Solution

11. निम्नलिखित का विग्रह करके समास का नाम लिखिए :

चन्द्रखिलौना

View Text Solution

12. निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए:

धन और दौलत

View Text Solution

13. निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए:

राष्ट्र की संपत्ति

View Text Solution

14. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

छक्के छुड़ाना

View Text Solution

15. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

आँखें खुल जाना

View Text Solution

16. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

'गिन्नी का सोना' पाठ में शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से क्यों की गई है ?

View Text Solution

17. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

सआदत अली को अवध के तख्त पर बिठाने के पीछे कर्नल का क्या उद्देश्य था?

View Text Solution

18. अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले पाठ में बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या कुप्रभाव बताया गया है? अपने शब्दों में विस्तार से लिखिए।

View Text Solution

19. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

अकसर हम या तो गुजरे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते हैं या भविष्यकाल । असल में दोनों काल मिथ्या हैं। एक चला गया है, दूसरा आया नहीं है। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है। उसी में जीना चाहिए।

गद्यांश में लेखक ने किन बातों में उलझे रहने की बात कही है?

View Text Solution

20. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

अकसर हम या तो गुजरे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते हैं या भविष्यकाल । असल में दोनों काल मिथ्या हैं। एक चला गया है, दूसरा आया नहीं है। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है। उसी में जीना चाहिए।

आशय स्पष्ट कीजिए : असल में दोनों काल मिथ्या हैं।

View Text Solution

21. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

अकसर हम या तो गुजरे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते हैं या भविष्यकाल । असल में दोनों काल मिथ्या हैं। एक चला गया है, दूसरा आया नहीं है। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है। उसी में जीना चाहिए।

लेखक ने सत्य किसे कहा है और क्यों?

View Text Solution

22. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बिहारी ने जगत को तपोवन क्यों कहा है और इससे क्या संदेश देना चाहा है?

View Text Solution

23. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

'आत्मत्राण कविता में कवि किससे और क्या प्रार्थना करता है?

View Text Solution

24. कर चले हम फिदा' कविता में किस प्रकार की मृत्यु को अच्छा कहा गया है और क्यों? इससे कवि क्या संदेश देना चाहता है?

View Text Solution

25. जीवन मूल्यों के आधार पर इफ्फन और टोपी शुक्ला के संबंधों की समीक्षा कीजिए।

View Text Solution

26. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए:

देशाटन

- क्या और क्यों
- शैक्षिक महत्त्व
- साधन और सुविधा

View Text Solution

27. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए:

विज्ञान के आधुनिक चमत्कार

- मानव जीवन और विज्ञान
- आधुनिक आविष्कार
- लाभ-हानि

View Text Solution

28. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए:

शारीरिक श्रम

- श्रम और मानव जीवन
- लाभ
- सुझाव

View Text Solution

29. यात्रा करते समय मेट्रो में छूट गए अपने बैग और मोबाइल को मेट्रो कर्मचारी द्वारा आपको वापस भेज दिए जाने पर उसकी ईमानदारी की प्रशंसा करते हुए प्रबंधक को एक पत्र लिखिए।

View Text Solution

30. विद्यालय के वार्षिकोत्सव की सूचना साहित्यिक क्लब की 'प्राचीर' पत्रिका के लिए लगभग 30 शब्दों में लिखिए।

View Text Solution

31. अपने पुराने घरेलू फर्नीचर को बेचने के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

View Text Solution

Delhi Term Ii Set Ii

1. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

जब-जब प्राकृतिक आपदा आती है, लोग दिल खोलकर सहायता करते हैं। (रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए)

View Text Solution

2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

शिक्षक के आते ही वहाँ सन्नाटा छा गया। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

3. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

लाल कमीज पहनकर आने वाला व्यक्ति मेरा पड़ोसी है। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

4. निम्नलिखित का विग्रह करके समास का नाम लिखिए :

कर्मफल

View Text Solution

5. निम्नलिखित का विग्रह करके समास का नाम लिखिए :

हिसाब-किताब

View Text Solution

6. निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए :

मिट्टी जैसा मैला

View Text Solution

7. निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए :

हाथ से बनाया हुआ

View Text Solution

8. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

सिर मारना

View Text Solution

9. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

मुट्ठी गरम करना

View Text Solution

10. मनुष्यता' कविता में कवि ने किन महान व्यक्तियों का उदाहरण दिया है और उनके माध्यम से क्या संदेश देना चाहा है?

View Text Solution

11. बस में यात्रा करते हुए आपका एक बैग छूट गया था जिसमें जरूरी कागज और रुपये थे। उसे बस कंडक्टर ने आपके घर आकर लौटा दिया। उसकी प्रशंसा करते हुए परिवहन निगम के अध्यक्ष को पत्र लिखिए।

View Text Solution

Delhi Term Ii Set Iii

1. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

जब-जब वह यहाँ आता है तो पढ़ाई के बारे में चर्चा करता है।

(रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए)

View Text Solution

2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

घनघोर वर्षा के कारण वहाँ के सभी रास्ते बंद हो गए।

(संयुक्त वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

3. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

आजकल मैं घर के सभी काम करता हूँ और समय पर कार्यालय जाता हूँ। (सरल वाक्य में बदलिये)

View Text Solution

4. निम्नलिखित का विग्रह करके समास का नाम लिखिए :

पत्रव्यवहार

View Text Solution

5. निम्नलिखित का विग्रह करके समास का नाम लिखिए :

शुभदर्शन

View Text Solution

6. निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए :

अग्नि की ज्वाला

View Text Solution

7. निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए :

सेवा और सुश्रूषा

View Text Solution

8. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

खाक छानना

View Text Solution

9. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

आँखों पर बिठाना

View Text Solution

10. अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए कि प्रकृति में असंतुलन क्यों हो रहा है? इसके परिणाम क्या हैं ?

View Text Solution

11. “कर चले हम फिदा” गीत किस पृष्ठभूमि में लिखा गया?

गीत का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

View Text Solution